[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 2829 **G**

Unique Paper Code : 2055092001

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas ke Vividh Charan (A)

Name of the Course : **B.Com. Prog. GE**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. (क) दिलफिगार इन्हीं खयालों में चक्कर खा रहा था और अक्ल कुछ काम नहीं करती थी मुनीर शामी को हातिम-सा मददगार मिल गया। ऐ काश-, कोई मेरा भी मददगार हो जाता। ऐ काश! मुझे भी उस चीज का, जो दुनिया की सबसे बेशकीमती चीज है, नाम बतला दिया जाता। वह चीज हाथ न आती मगर इतना तो मालूम हो जाता कि वह किस किस्म की चीज है। मैं घड़े

P.T.O.

Scanner by Droid-Veda

बराबर मोती की खोज में जा सकता हूं। मैं समुन्दर का गीत, पत्थर का दिल, मौत की आवाज और इनसे भी ज्यादा बेनिशान चीजों की तलाश में कमर कस सकता हूं; मगर यह दुनिया की सबसे अनमोल चीज मेरी कल्पना की उड़ान से बहुत ऊपर है।

अथवा

बहुत दिनों के बाद बाजारों में तुर्रेदार पगड़ियां, लाल तुर्की टोपियां नजर आ रही थीं। लाहौर से आए मुसलमानों में काफी संख्या ऐसे लोगों की थी जिन्हें विभाजन के समय मजबूर होकर अमृतसर से जाना पड़ा था। साढ़े सात साल में आए अनिवार्य परिवर्तनों को देखकर कहीं उनकी आंखों में हैरानी भर जाती और कहीं अफसोस घिर आता। वल्लाह! कटरा जयमल सिंह इतना चौड़ा कैसे हो गया?– क्या इस तरफ के सब–के–सब मकान जल गए थे?... यहां हकीम आसिफ अली की दुकान थी न? अब यहां एक मोची ने कब्जा कर रखा है?

(ख) दुख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनंद वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के निश्चय से विशेष रूप में दुखी और कभी–कभी स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म–सुख की उमंग में अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ–साथ कर्म में प्रवृत्त होने के आनंद का योग रहता है। साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

2829

अथवा

आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। इस भाषा का नियम शुद्ध श्वेत पत्रों वाला है। इसमें नाम मात्र के लिए भी शब्द नहीं। यह सभ्याचरण नाद करता हुआ भी मौन है, व्याख्यान देता हुआ भी व्याख्यान के पीछे छिपा है, राग गाता हुआ भी राग के सुर के भीतर पड़ा है। मृदु वचनों की मिठास में आचरण की सभ्यता मौन रूप से घुली हुई है। नम्रता, दया, प्रेम और उदारता सबके सब सभ्याचरण की भाषा के मौन व्याख्यान हैं। मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चिरस्थायी होता है और उसकी आत्मा का एक अंग हो जाता है।

(ग) दूत ने सिर झुकाकर कहा– "महाराज! आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज़ें भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। मालगाड़ी के होजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे के अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद खराबी करने के लिए तो नहीं उड़ा दिया?"

अथवा

पन्ना: ओह! क्रूर बनवीर! तुम तो उदयसिंह के संरक्षक थे। रक्षा के बदले क्या तुम उसकी हत्या करोगे? नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता। महाराणा बनवीर तुम राज करो चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूताने पर राज करो। पर कुंवर उदय सिंह को छोड़ दो।

P.T.O.

मैं उसे लेकर संन्यासिन हो जाऊंगी। तीर्थों में वास करूंगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे माथे पर रहे, पर मेरा कुंवर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर! महाराणा बनवीर, मुझे यह भिक्षा दे दो।

(8×3=24)

2. हिंदी कहानी के विकास पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।

अथवा

रेखाचित्र और संस्मरण की परिभाषा देते हुए उसकी विशेषताएं बताइए। (15)

3. कहानी के तत्वों के आधार पर 'अनमोल रतन' कहानी की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी का सार लिखिए। (15)

4. शिल्प की दृष्टि से 'उत्साह' निबंध का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

5. 'दीपदान' एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

व्यंग्य विधा के आधार पर 'भोलाराम का जीव' का विश्लेषण कीजिए। (15)

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) एकांकी

(ख) रेखाचित्र

(1500)

Scanner by Droid-Veda